कविता : साजन बिन सावन

-मनीषा कुमारी आर्जवांबिका
बी.स्वतंत्र लेखन, साहित्य एवं सिनेमा में गहरी रुचि। पुण्यानंद पैलेस, फतेहपुर, अररिया (बिहार)
https://sahityacinemasetu.com/poem-sajan-bin-sawan/

हो पिया जब परदेश में
सावन भी सूखा लगता है
सजनी का हर श्रृंगार भी
पी बिन अधूरा लगता है

बारिश की हरेक बूंद भी
तब आग ही बन जाती है
सावन की सुहानी रातों में
जब याद पिया की आती है

व्याकुल रहता है मन
मिलन को तरस जाता है
बिना साजन सारा सावन
आंखों से ही बरस जाता है